नियन्त्रण के उपाय

अच्छी प्रकार पकी हुई गोबर की खाद का ही उपयोग करें ; मृदा में फोरेट 10जी को 10 कि.ग्रा./हे. या क्लोरोपायरीफॉस 1.5% चूर्ण 20–25 कि.ग्रा./हे. की दर से बुवाई के पूर्व खेत में देना चाहिए।

रोग प्रबंधन

जीवाणु पत्ती धब्बा या झुलसाः

इस रोग के कारण पत्तियों पर छोटे, बडे व अनियमित आकार के भूरे धब्बे दिखाई देते हैं तथा रोग की तीव्रता की दशा में पत्तियाँ गिर जाती है।

रोग नियन्त्रण : इसके नियंत्रण के लिये बीजों को बुवाई के पूर्व बीजों को स्ट्रेप्टोसाइक्लिन के 500 पी.पी.एम. (0.5 ग्रा./ली.) घोल में बीजो को 30 मिनट के लिये भिगा कर रखें। इसके बाद खड़ी फसल में स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 0.01ः (1ग्रा./10 ली.) व कॉपर आक्सीक्लोराइड 3 ग्रा./ली. के हिसाब से घोल बनाकर 12 दिन के अन्तराल पर छिडकाव करें।

पीला मोजेक रोग

रोग नियन्त्रण : इस रोग के नियन्त्रण के लिये डायमिथिएट 30 ई.सी. का 1.7 मि.ली./ली. या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. का 0.2 मि.ली./ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें तथा 15 दिन बाद दोबारा छिड़काव करें।

कटाई, गहाई व भण्डारण

जब फलियाँ पक जाएँ और उनका रंग भूरा पड जाए तब कटाई करना चाहिए। कटाई के उपरान्त फसल को ढेर लगाकर 3–5 दिन के लिये धूप में सुखाते है। इसके बाद गहाई की जाती है। गहाई के बाद दाने को धूप में लगभग 8–10% नमी होने तक सुखाते हैं। इसके बाद दाने का भण्डारण किया जाता है।

उपज

उन्नत विधि से खेती करने पर दाने के लिए बोई गई फसल से 6–8 क्विंटल दाना प्रति हे. प्राप्त होता है तथा हरे चारे के लिए बोई गई फसल से 12–25 क्विंटल प्रति हे. हरा चारा प्राप्त होता है।

अधिक उत्पादन लेने हेतु आवश्यक बिंदू

- ग्रीष्म कालीन गहरी जुताई तीन वर्ष में एक बार अवश्य करें।
- बुवाई पूर्व बीजोपचार अवश्य करें।
- पोषक तत्वों की मात्रा मृदा परीक्षण के आधार पर ही दें।
- पौध संरक्षण के लिये एकीकृत पौध संरक्षण के उपायों को अपनाना चाहिए।
- खरपतवार नियंत्रण अवश्य करें।
- तकनीकी जानकारी हेतु अपने जिले / नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र से संपर्क करें।
- भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा फसल उत्पादन (जुताई, खाद, बीज, सूक्ष्म पोषक तत्व, कीटनाशी, सिंचाई के साधनों), कृषि यन्त्रों, भण्डारण इत्यादि हेतु दी जाने वाली सुविधाओं/अनुदान सहायता/ लाभ की जानकारी हेतु संबंधित राज्य /जिला/ विकासखण्ड स्थित कृषि विभाग से संपर्क करें।

अधिक जानकारी हेतु देखें–
एम–किसान पोर्टल– http://mkisan.gov.in/
फार्मर पोर्टल– http://farmer.gov.in/
किसान कॉल सेन्टर– टोल–फ्री नं – 1800–180–1551

लेखन एवं संपादन
डॉ ए. के. तिवारी
डॉ ए. के. शिवहरे
श्री विपिन कुमार

तकनीकी सहयोग
डॉ. दिव्या सहारे
श्रीमती अष्विनी भौंवरे
श्री सरजू पल्लेवार

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

निदेशक
भारत सरकार
दलहन विकास निदेशालय
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि, सहकारिता एव किसान कल्याण विभाग
छठी मंजिल, विन्ध्याचल भवन, भोपाल–462004 (म.प्र.)
ई–मेल – dpd.mp@nic.in
फेक्स – 0755-2571678,
दूरभाष – 0755-2550353/ 2572313
वेबसाइट – www.dpd.gov.in

IFFCO 50 1967 2017
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व Wholly owned by Cooperatives
स्वर्ण जयंती Golden Jubilee
इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड
राज्य कार्यालय–मध्यप्रदेश
ब्लाक–2, तृतीय तल, ''पर्यावास'', अरेरा हिल्स, भोपाल–462011
दूरभाष: 0755- 2555883, 4036202, 4036217
वेबसाइट : http://www.iffco.in, Email: smm_bhopal@iffco.in

मुद्रक : कृषक जगत प्रींटिग वर्क्स, भोपाल, दूरभाष : 9826255861

मोठ

सत्यमेव जयते
भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग
दलहन विकास निदेशालय
छठी मंजिल, विन्ध्याचल भवन भोपाल - 462004 (म.प्र.)

सौजन्य से :
IFFCO 50 1967 2017
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व Wholly owned by Cooperatives
स्वर्ण जयंती Golden Jubilee
किसानों, कृषि एवं सहकारिता को समर्पित
गौरवमयी स्वर्ण जयंती वर्ष में
इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड
राज्य कार्यालय–मध्यप्रदेश
ब्लाक–2, तृतीय तल, ''पर्यावास'', अरेरा हिल्स, भोपाल–462011

SOIL HEALTH CARD
स्वस्थ धरा, खेत हरा
स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
Per Drop, More Crop

मोठ

दलहनी फसलों में मोठ सर्वाधिक सूखा सहन करने वाली फसल है। असिंचित क्षेत्रों के लिए यह फसल लाभदायक है। राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, देश के प्रमुख मोठ उत्पादक राज्य हैं।

फसल स्तर बारहवीं पंच वर्षीय योजना (2012–2015) के अन्तर्गत भारत में मोठ का कुल क्षेत्रफल 9.26 लाख हे. व उत्पादन 2.77 लाख टन था। राजस्थान में मोठ का क्षेत्रफल (96.75 प्रतिशत) व उत्पादन (94.49%) सर्वाधिक है। इसके बाद गुजरात का स्थान (2.38% व 3.6%) आता है। यद्यपि राजस्थान की उपज (292 कि.ग्रा./हें.) राष्ट्रीय औसत उपज (299 कि.ग्रा./हे.) से कम है।

जलवायु

मोठ की फसल बिना किसी विपरीत प्रभाव के फूल व फली अवस्था में उच्च तापमान को सहन कर सकती है और इसके वृद्धि व विकास के लिये 25°–37° सेन्टीग्रेड तापक्रम की आवश्यकता होती है। वार्षिक वर्षा 250–500 मि.मी. व साथ ही उचित निकास की आवश्यकता होती है।

उन्नतशील प्रजातियाँ

राज्यवार प्रमुख प्रजातियों का विवरण

राज्य	प्रजातियाँ
राजस्थान	आर.एम.ओ.–257, आर.एम.ओ.–435, आर.एम.ओ.–2004 (आर.एम.बी.25), आर.एम.ओ.–225, आर.एम.ओ.–40, एफ.एम.एम. 96, मोथ 880, ज्वाला, काजरी मोठ–2 (सी.जेड.एम. 45), काजरी मोठ–3 (सी.जेड.एम. 99), टी.एम.वी. (एम.बी.–1)
गुजरात	जी.एम.ओ. 1, जी.एम.ओ. 2,), मारू बहार (आर.एम.ओ.–435)
महाराष्ट्र	काजरी मोठ–2 (सी.जेड.एम. 45), काजरी मोठ–3 (सी.जेड.एम.99), मारू बहार (आर.एम.ओ.–435)
हरियाणा	काजरी मोठ–2 (सी.जेड.एम. 45), काजरी मोठ–3 (सी.जेड.एम. 99),

स्त्रोतः– सीडनेट, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय , भारत सरकार एवं भा.द.अनु.सं.–भा.कृ.अनु.प., कानपुर।

अन्य प्रजातियां

आर.एम.ओ..257, आर.एम.ओ. 423, आर.एम.ओ. 435, जे.एम.वी.–1, सी.ऐ.जेड.आर.ई.–2, सी.ऐ.जेड.आर.ई.–3,

उपज अन्तर

सामान्यतः यह देखा गया है कि अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन की पैदावार व स्थानीय किस्मों की उपज में 20–45% का अन्तर है। यह अन्तर कम करने के लिये अनुसंधान संस्थानों व कृषि विज्ञान केन्द्र

राज्यवार प्रमुख प्रजातियों की अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत पैदावार निम्न तालिका में दर्शायी गयी है–

राज्य	प्रयुक्त प्रजाति संस्तुत	उपज कि.ग्रा./हे. संस्तुत	लोकल	प्रतिशत अधिक लोकल से
राजस्थान	आर.एम.ओ.–435	671	547	22.66
	आर.एम.बी.–25	685	486	40.94
	आर.एम.ओ.–257	584	465	25.59
गुजरात	जी.एम.ओ.–2	654	544	20.22

की अनुशंसा के अनुसार उन्नत कृषि तकनीक को अपनाना चाहिए।

भूमि का चुनाव

अच्छे जल निकास व उच्च उर्वरता वाली दोमट भूमि सर्वोत्तम रहती है। खेत में पानी का ठहराव फसल को भारी हानि पहुंचाता है।

खेत की तैयारी

खेत को दो बार कल्टीवेटर या हैरो से जुताई कर पाटा लगाकर खेत समतल कर लेना चाहिए।

बुआई समय

जून के तीसरे सप्ताह से लेकर जुलाई के पहले पखवाड़े तक या मानसून प्रारम्भ होने के तुरन्त बाद कर देना चाहिए। उर्द व मूँग की तरह पंक्तियों में निर्धारित गहराई पर सीड ड्रिल या चोंगा द्वारा बुआई करने पर पर्याप्त पौध संख्या प्राप्त की जा सकती है।

उर्वरक

प्रति हेक्टर 10–20 कि.ग्रा नाइट्रोजन, 40 कि.ग्रा फास्फोरस की आवश्यकता होती है। सभी उर्वरकों को आधार उर्वरक के रूप में देना चाहिए।

बीजोपचार

मृदाजनित रोगों से बचाव के लिए बीजों को 2 ग्राम थीरम व 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति कि.ग्रा अथवा 3 ग्राम थीरम प्रति कि.ग्रा की दर से उपचार करें। फफूंदनाशी दवा के उपचार के बाद बीजों को राइजोबियम व पी.एस.बी कल्चर 5–7 ग्राम मात्रा प्रति कि.ग्रा. बीज के हिसाब से उपचारित करें।

फसल अंतराल : पंक्ति से पंक्तिः 30–45 से.मी. ; पौध से पौध : 10 –20 से.मी.

बीजदर

1. शुद्ध फसल के लिए 10–15 कि.ग्रा/हे. (पंक्तियों में बुआई करने पर)।
2. मिश्रित खेती के लिए 4–5 कि.ग्रा/हे.।
3. चारे की खेती के लिए 20–25 कि.ग्रा/हे.।

सिंचाई

चूँकि यह फसल असिंचित दशा में बोई जाती है लम्बे समय तक वर्षा न हो तो दाना बनते समय एक सिंचाई करना फायदेमन्द होता है।

खरपतवार नियंत्रण

बुआई के 25 से 30 दिन तक खरपतवार फसल को अत्यधिक नुकसान पहुंचाते हैं बुआई से एक–दो दिन पश्चात पेन्डीमिथालीन की 0.75–1 कि.ग्रा सक्रिय तत्व की मात्रा को 400–600 लीटर पानी में घोलकर एक हेक्टेयर में छिड़काव करना लाभप्रद रहता है। बुवाई के 25–30 दिन बाद एक निंदाई कर देनी चाहिए।

फसल सुरक्षा

रस चूसक कीट

नियन्त्रण के उपाय

रस चूसक कीट जैसे जैसिड, सफेद मक्खी, थ्रिप्स, माहू इत्यादि के नियंत्रण के लिये जल्दी बुवाई करें। फसल पर किसी एक कीटनाशी जैसे डायमिथिएट 30ई.सी. का 1.7 मि.ली./ली. या थायोमेथोक्जम 25 डब्लू.जी. का 0.2 ग्रा./ली. या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. का 0.2 मि.ली./ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

दीमक व सफेद ग्रबः

यह भूमिगत कीट है जो पौधे की जड़ें काटकर नुकसान पहुँचाते हैं।